हरित क्रान्ति के लाभ या आर्थिक परिणाम

हरित क्रान्ति से देश के कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। उत्पादन बढ़ा है। खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हुआ है। कृषक के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ है। खाद्यान्नों के आयात को बन्द करने की सम्भावना है। कृषि बचतों में वृद्धि हुई है। हरित क्रान्ति के अन्य लाभ या आर्थिक परिणाम निम्न प्रकार हैं :

(1) **अधिक उत्पादन**—हरित क्रान्ति या नवीन कृषि नीति से सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि कृषि उत्पादन बढ़ा है, विशेष रूप से गेहूं, बाजरा, चावल, मक्का व ज्वार में आशातीत वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्नों में भारत आत्मनिर्भर-सा हो गया है।

(2) **परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन**—नवीन कृषि नीति से खेती के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन हुआ है और खेती व्यावसायिक दृष्टि से की जाने लगी है, जबकि पहले सिर्फ पेट भरने के लिए उत्पादन करने की दृष्टि से की जाती थी।

(3) **कृषि बचतों में वृद्धि**—उन्नत बीज, रासायनिक खादें, उत्तम सिंचाई साधन व मशीनों के प्रयोग से उत्पादन बढ़ा है जिससे कृषक के पास बचतों की मात्रा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है जिसको देश के विकास के काम में लाया जा सका है। इससे औद्योगिक क्षेत्र में भी प्रगति हुई है। उत्पादन बढ़ा है।

(4) **विश्वास**—हरित क्रान्ति का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि कृषक, सरकार व जनता सभी में यह विश्वास जाग्रत हो गया है कि भारत कृषि पदार्थों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर ही नहीं हो सकता है, बल्कि निर्यात भी कर सकता है।

Scanned with CamScanner

(5) **खाद्यान्नों के आयात में कमी**—प्रो. एम. एल. दान्तवाला के मत में, "**हरित क्रान्ति ने सांस लेने योग्य राहत का समय दिया है।** इससे खाद्यान्नों की कमी की चिन्ता से छुटकारा मिलेगा तथा अर्थशास्त्रियों व नियोजकों का ध्यान पुनः भारतीय योजनाओं की ओर लगेगा।" वास्तव में, हरित क्रान्ति होने से खाद्यान्नों का आयात पूर्णतः बन्द कर दिया गया था, लेकिन बाद के कई वर्षों में खाद्यान्नों का उत्पादन कम होने के कारण कुछ खाद्यान्नों का आयात किया गया है।

(6) **रोजगार अवसरों में वृद्धि**—हरित क्रान्ति से देश में रोजगार अवसरों में वृद्धि हुई है। खाद, पानी, यन्त्रों, आदि के सम्बन्ध में लोगों को रोजगार मिला है। मरम्मत उद्योग में भी कुछ व्यक्तियों को रोजगार सुविधा मिली है।

हरित क्रान्ति की कमियां या समस्याएं

हरित क्रान्ति से कुछ फसलों के उत्पादन में वृद्धि हुई है, लेकिन फिर भी इसमें कुछ कमियां हैं। अतः कुछ समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं। हरित क्रान्ति की कमियां या समस्याएं निम्न प्रकार हैं :

(1) **प्रभाव कुछ फसलों तक ही सीमित**—हरित क्रान्ति कुछ फसलों जैसे, गेहूं, ज्वार, बाजरा तक ही सीमित है अन्य फसलों तक इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। यहां तक कि चावल भी इससे बहुत ही कम प्रभावित हुआ है। अन्य व्यापारिक फसलें भी इससे अप्रभावित ही हैं।

(2) **असन्तुलित विकास**—हरित क्रान्ति का क्षेत्र कुछ ही राज्यों तक सीमित है विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र व तमिलनाडु। इसमें भी इन राज्यों के कुछ ही भागों पर हरित क्रान्ति का प्रभाव है। इस प्रकार हरित क्रान्ति सारे देश में नहीं फैल पायी है। इसीलिए अर्थशास्त्री इसको सीमित सफलता ही मानते हैं। इससे देश में विकास सन्तुलित रूप से नहीं हुआ है।

(3) **पूंजीवादी कृषि को प्रोत्साहन**—हरित क्रान्ति से लाभ केवल उन किसानों को ही हुआ है जिन्होंने पम्पिंग सेट, नल-कूप, ट्रैक्टर व कृषि यन्त्रों को लगा लिया है। भारत में यह कार्य बड़े किसान ही कर सकने में समर्थ हैं। एक सामान्य किसान इन सुविधाओं से लाभ प्राप्त नहीं कर सकता है। साथ ही बड़े किसानों को ही सरकार व सहकारी समिति, आदि से सुविधाएं मिल जाती हैं। इन सबके परिणामस्वरूप बड़े किसान ही लाभ उठा रहे हैं और इस प्रकार पूंजीवादी कृषि को प्रोत्साहन मिल रहा है।

(4) **खेतिहर श्रमिकों को कठिनाई**—बड़े-बड़े फार्मों में नवीन तकनीकी प्रयोग के कारण मानवीय श्रम की आवश्यकता पड़ती है, जिसके परिणामस्वरूप खेतिहर मजदूरों में बेरोजगारी बढ़ी है जिससे उनको कठिनाई होने लगी है।

(5) **कृषि उत्पादन की वार्षिक दर**—हरित क्रान्ति के फलस्वरूप यह आशा की गयी थी कि कृषि उत्पादन की वार्षिक दर में वृद्धि होगी, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। 1949-50 से 2001-02 के बीच कृषि विकास दर का औसत 2.7 प्रतिशत रहा है जो कम है।

(6) **आधुनिक तकनीकों के प्रयोग में बाधा**—अधिकांश भारतीय कृषकों के पास छोटी-छोटी जोतें हैं। अतः वे आधुनिक साधनों को अपनी खेती पर काम में नहीं ला सकते हैं। इस प्रकार ये कृषक हरित क्रान्ति के लाभों से वंचित रह गए हैं।

(7) **सिंचाई की अनिश्चितता**—हरित क्रान्ति पानी की पूर्ति निश्चित नहीं कर सकी है, जबकि खेती के लिए सिंचाई की व्यवस्था समय पर होना परम आवश्यक है। ट्यूबवैल जैसे साधनों में भारी रकम की आवश्यकता है। अतः पानी किराए पर देने की व्यवस्था की जाए तो अधिक उचित होगा।

Scanned with CamScanner